

मात्र तुम्हारी करुणा धारा,
मर्त्य धरा के प्रति, धरे।।”

निष्कर्ष:-

पंत के काव्य में विविधवादों के तहत पर्यावरण चेतना, प्रकृतिप्रियता और जीवन के प्रति मानवीय गान गुंजायमान हैं। छायावाद, प्रगतिवाद, गाँधीवाद, मार्क्सवाद, अरविन्दवाद और व्यापक विस्तृत विराट मानवतावाद में प्रकृतिप्रियता और गहरी पर्यावरण चेतना विद्यमान है। पंत जी की दीर्घकालीन काव्यसाधना में अनेक आयाम हैं। अनेक पड़ाव, अनेक विस्तार, अनेक चढ़ाव और अनेक संवेदनशील पहलु रेखांकित हैं। पंत के काव्य में प्रकृति, पर्यावरण और जीवन की मानवीय संवेदनाएँ निहित हैं। पंत सम्पूर्णता के कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनमें विविधवाद और पर्यावरण चेतना है।

संदर्भ –

1. सुमित्रानन्दन पंत - युगवाणी, पृष्ठ 63
2. सुमित्रानन्दन पंत - युगवाणी, 'साम्यवाद-गाँधीवाद', पृष्ठ 58
3. सुमित्रानन्दन पंत - युगवाणी, पृष्ठ 47
4. सुमित्रानन्दन पंत - युगान्त, पृष्ठ 15
5. सुमित्रानन्दन पंत - युगपथ, पृष्ठ 63

उदय प्रकाश की चयनित कविताओं में नारी संघर्ष का चित्रण

Mrs.K. Kavitha

Ph.D Scholar

Annamalai university

Ph. No.9345549568

भूमिका:-

आवेग, आवेश, विडम्बना और विलाप से मिलकर उदय प्रकाश की कविता बनती है। उसमें इतना धारदार व्यंग्य है जो करुणा जगाता है। उनकी कविताओं में ठंडापन नहीं आता, चीख और उत्तेजना का संश्लेषण मिलता है। उदय प्रकाश की काव्यशैली पर चित्रकला का भी मिला जुला

प्रभाव है। उदय प्रकाश की कविताओं में झलकते-उभरते स्त्री-चरित्र ऐसे सवालों को उठाते हैं कि सर झुककर खामोश रहना पड़ता है। उनकी कविताओं में नारी पर और उनकी समस्याओं पर लिखी गयी कविताएँ माँ, नींव की ईंट हो तुम दीदी, कवि की पीड़ित खूफिया आँखें, वे यही कहीं हैं, पंचनामे में जो दर्ज नहीं हैं और औरतें आदि का विश्लेषण करेंगे। नारी जीवन का मूलाधार उसके समान अधिकार को प्राप्त कर लेने में हैं, तभी वह एक विकासपूर्ण तथा गतिशील जीवन जी सकती है। नारी अपनी अस्थित्व के लिये समान अधिकार को पाने की कोशिश कर रही है, जो उसका मूलाधार होता है। प्रधान समाज में नारी की हैसियत, अधिकार, अस्मितता तथा अस्थित्व को लेकर, नारी के सामने कई प्रश्न हैं जिसका हल वह स्वयं ढूँढती रहती है। इतिहास ही साक्षी होती है कि मातृसत्तात्मक समाज में नारी की स्थिति, केंद्र में थी, हाशिए पर नहीं थी। नारी हर रूप में चाहें वह माँ हो, बहन हो या पत्नी हो, पुरुष का संस्कार करती है। माँ बनकर पुरुष को जन्म देती है, पोषण करती है, वाणी भी प्रदान करती है। हर मनुष्य के जीवन में, सांस में जुड़ा हुआ, मिला हुआ और उसके जन्म से मृत्यु तक, एक ही शब्द होता है। "माँ" कवि अपनी "माँ" शीर्षक कविता में कहते हैं -वही पहला वाक्य

जिसके मध्य में मैं इस धरती पर आया

और जिसमें एक ही शब्द था

फ़क्त एक व्यंजन और उसी में विलीन होता एक स्वर

बिना किसी विराम के सौरमंडल के अनंत तक जाता हुआ

उनके यह पद का तात्पर्य यह होता है कि माँ यह एक शब्द पूरी दुनिया में इसकी ध्वनी गूँज उठती है। कवि ने अपनी बुरी स्थितियों में यह अनुभव किया है कि हमेशा एक हाथ उनके साथ रहता है, वह होता है उनकी माँ का।

उनके शब्दों में देखेंगे -

अचरज है कि आज तक

जब भी घिरता हूँ मैं अँधेरे और

अकेलापन में अपनी जर्जरता के साथ

हर बार पता नहीं कहाँ से चला आता है वही पहला वाक्य

मेरी ओर अपने व्याकुल हाथ बढ़ाता हुआ

कवि को यह बात और अचरज में डालता है कि यह एक शब्द दुनिया की सभी भाषाओं के शब्दकोशों में मौजूद है। पर किसी भी व्याकरण ने क्यों इसको एक वाक्य का दर्जा नहीं दिया था? हम से भी यह सवाल करते हैं -उसे

समूचे वाक्य का दर्जा नहीं दिया था

आप बताएँगे क्यों ?

और यह भी कि आखिर आप किस वाक्य के बीचोंबीच

अपने शहर या पृथ्वी पर आये थे ?

हाँ , वह एक शब्द तो नहीं , अपने में एक पूरा वाक्य होता है | वह एक ही ध्वनि सारी दुनिया की नींव होती है |

असंख्य क्रियापदों , कर्ताओं
विश्लेषणों और कालवाची सहायक क्रियाओं वाले
श्लेष और दुर्गम वक्रोक्तियों से लदे-फदे वाक्य
जिनसे चलता है सारा कारोबार
व्यापार और सरकार

कवि की "नींव के ईंट हो तुम दीदी " कविता है जिसमे दीदी का स्थान उनकी जिंदगी में कैसा होता है ? कवि ने अपनी दीदी को पीपल का पेड़ , ढिबरी , चट्टान माना है | प्रतीक योजना का प्रयोग इसमें पाया जाता है -

"पीपल होती तुम
पीपल, दीदी
पिछवाड़े का , तो
तुम्हारी खूब घनी - हरी टहनियों में
हारिल हम
बसेरा लेते |

हारिल कहने का तात्पर्य शायद यह होता है - सब लड़कियों का घर कहीं नहीं होता | जैसे हारिल का घोंसला कहीं नहीं होता | इस कड़वी सच्चाई पर प्रकाश डाला है | कवि ने | दीदी को फिर कवि ने ढिबरी में पाया है |

ढिबरी थीं दीदी तुम
हमारे बचपन की
अचार का तलछट तेल
अपनी कपास की बाती में सोखकर
हमने सीखे थे पहले - पहल अक्षर

अपने बचपन , जिसे वापस नहीं पा सकते पर याद दिला सकते हैं , उसे हम कवि की पंक्तियों द्वारा अवश्य महसूस कर सकते हैं | उनसे खोये गए बचपन , खोयी गयी बचपन की खिलौने , गेंदें कहीं भी न मिल सकती , पर याद में बनी रहती | अपनी दीदी की शादी के बाद , उसकी जगह तो बदल गयी पर वहीं पीपल होती , ढिबरी होती , किसी और के यहाँ की नींव की ईंट बन गयी |

कवि के शब्दों में -

दीदी , अब
अपने दूसरे घर की
नींव की ईंट हुयी तुम तो
तुम्हारी नहीं दुनिया में
होंगी कही हमारी खोयी हुई गेंदें
होंगे कहीं हमारे पतंग और खिलौने
अब तो ढिबरी हुई तुम
अन्य आँगन की
कोई और बचपन
चीन्हता होगा पहले पहल अक्षर

हमेशा नारी ही बन जाती हर जगह में नींव की ईंट , मायके में , ससुराल में , सभी जगहों की नींव वही होती है पर उसका घर कहीं नहीं होता | शादी के बाद मायके जाते समय भी मेहमान जैसा ही जा सकती है | कवि कहते हैं -

हमारा क्या , दिदिया री |
हारिल हैं हम तो
आएंगे बरस - दो बरस में कभी
दो- चार दिन
मेहमान सा ठहरकर

फिर उड़ लेंगे कहीं और |
घोंसले नहीं बनाये हमने
बेस नहीं आज तक |

कवि के कथन से यह सच्चाई झलकती है कि औरतें ही घर की नींव की ईंट होती हैं | नींव की जरूरत ज्यादा होने पर बाहर दिखाई नहीं देती | उसकी मौजूदगी अंदर ही होती है जिसके बिना दृढ़ खड़े होना असंभव है और साथ ही यह भी महसूस होता है कि यह कविता लिखते समय कवि ने अपने को शायद स्त्री ही मान लिया होगा | क्योंकि कई जगहों में इसकी झलक मिलती है |

उदय प्रकाश की "कवि की पीड़ित खुफिया आँखें , पंचनामे में दर्ज नहीं , औरतें आदि कविताओं में नारी की पीड़ा , दर्द , उसपर होनेवाले अत्याचार आदि का चित्रण सरल लेकिन तीखे शब्दों में किया है | कवि की पीड़ित खुफिया आँखें कविता में व्यक्त की गयी नारी की बुरी स्थिति पर नज़र डालेंगे | एक स्त्री का मान बंग करके उसकी हत्या भी कुछ ही क्षणों में हो जाती है | पर उन अत्याचारों पर मुकदमा दो शताब्दियों तक चलता है | स्त्री पर अत्याचार करनेवाले पापियों का उचित दंड देने में इतनी देर होती है | जब समाज में न्याय पर ध्यान न दिया जाता , कुरूर , अपराधियों का दंड नहीं दिया जाता , न्याय की बात नहीं सुनायी जाती है तो उपेक्षित मन लिए कवि ने अपना कान पूरी धरती पर लगाता है | तब कवि की पीड़ित , दर्द भरी आत्मा की आँखें खुफिया की भांति हर अँधेरे में सुलगती हुई दिखाई देती है | कवि के शब्दों में सुनिए -

जब नहीं सुनता है कोई किसी की बात तो एक उपेक्षित कवि
अपने कान समूची पृथ्वी पर लगाता है

हर अँधेरे में सुलगती हैं उसकी पीड़ित आत्मा की खुफिया आँखें
अपनी ज़रूरत की पूर्ती के लिए काम करनेवाली स्त्रियों का मानभंग करनेवालों और उन स्त्रियों का दुरुपयोग करनेवालों पर अपना कोप इन व्यंग्य भरे शब्दों में प्रकट करते हैं -

खैनी , राई , अरहर और गुड़ के लिए

अपने कपडे क्यों नहीं उतारती मधु सप्रे और अंजलि कपूर
इतनी कठोर कुरूर समाज यह होती है कि जोर जोर से हँसनेवाले एक स्त्री की अगले पल अचानक होती है | कवि की आत्मा कहती है
रात भर कई सालों से गिरती है आकाश से सिसकियाँ और खून
स्वप्न चुभते हैं उसके तलवों में जो भी इस समाज से गुजरता है
इस कविता के अंत में कवि यह बात कहकर हमें रुलाते हैं , सुनिए
कोई विश्वास होता है हर बार , जिसका घात होता है हर बार
सब लोग यह सब जानते हैं पर खामोशी ही लाजिमी है
जो यथार्थ को व्यक्त करता है
वर मार दिया जाता है अफवाहों से

यह सच ही होता है कि जो सच्चाई के पक्ष में खड़ा होता है उसपर झूठा आरोप ही किया जाता है | कवि से लिखी गयी और एक कविता होती है " वे यहीं कहीं हैं " (१ जनवरी , १९९० में सफ़दर हाशमी की हत्या की स्मृति में लिखी गयी कविता है) जिस औरत की हत्या की गयी है , वे कहीं नहीं गयी , वे यहीं कहीं हैं , उनके लिए क्यों रोना है | अपनी अकाल मृत्यु के कारण उनकी तड़पती आत्मा , इधर ही घूमती है | उनकी उपस्थिति हर जगह महसूस की जाती है |

वे अब भी जीवित है |
मरी नहीं | वे यहीं कहीं हैं |
उनके लिए रोना नहीं |
वे यहीं कहीं हैं
किसी दोस्त के गप्प लड़ा रहे हैं

कोई लड़की अपनी नींद में उनके सपने देख रही है वे किसी से छुपकर किसी से मिलने गए है उनके लिए आंसू नासमझी हैं उनके लिए रोना नहीं कवि के कथन का तात्पर्य यह होता है वे अपने सपने अधूरे ऐसे नहीं छोड़ेंगे ,किसी अनजान लड़की के माध्यम अपना स्वप्न साकार कर दिखाएंगे |

हाँ ,वे कहीं नहीं गयी

वे यहीं कहीं हैं

उनसे छीनी गयी उनकी अधूरी जिंदगी को इधर कहीं किसी चेहरे

के पीछे रहते हुए बिताएंगे |

उनके लिए क्यों रोना है

रोना नहीं ,वे यहीं कहीं हैं |

वे जेड हैं हजारों साल पुरानी

वे पानी के सोते हैं

धरती के भीतर भीतर पूरी पृथ्वी और पाताल तक वे रेंग रहे हैं

वे अपने काम में लगे हैं जबकि हत्यारे खुश हैं कि

हमने उन्हें खत्म कर डाला है |

पर वे मरी नहीं

यहीं कहीं हैं |

उनके लिए रोना नहीं |

कवि की और एक कविता होती है "पंचनामे में जो दर्ज नहीं है | औरत की पवित्रता पर संदेह करके उनकी जिंदगी को नारकीय बनानेवालों पर अपनी कविता के द्वारा कठोर आघात किया है कवि ने | कवि के शब्दों में देखेंगे |

सुबह - सुबह चादरों और उनके कपड़ों में

रात के रक्तपात के धब्बों से अनुमान लगाया गया

वे कितनी अक्षत और निष्कलंक थीं |

हर रात संदेह की आग से वे बिना जले निकल आतीं |

अक्सर उनके सतीत्व पर जांच होती जाती है |

ससुराल में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है | कभी कभी वह समस्या उन्हें मृत्यु तक खींचती हैं | वे इतनी झूठी होती हैं कि अपनी चिट्ठियों में लिखा करती थीं कि हम बहुत सुखी हैं | उनकी स्थिति शादी के पहले और बाद कवि के शब्दों में सुनिए -

वे तो पिता द्वारा वहां गमले में रोप दी गयी तुलसी का पौधा थीं

वे किसी जर्जर नाव की सड़ी-गली कमजोर पतवारों थीं

जिन्हें कोई स्वार्थी और क्रूर मल्लाह

समुद्र में पीटता है

जीवित रहते समय उसके चेहरे में मुस्कराहट की छाया न पडी, पर मृत्यु के बाद एक स्वतंत्र सी हंसी दिखाई देती है | कवि पूछते हैं -

यह तथ्य पंचनामे में पुलिस दर्ज नहीं करती

लेकिन हर कोई इसे देख सकता है

कि ठीक मृत्यु के बाद

एक बहुत सघन

एक बहुत स्वतंत्र -सी हंसी उनके होंठों पर आती है

उनकी हत्या के बाद, पुलिस उनके शव के इर्द -गिर्द

उनके शरीर पर पायी गयी

चीजों और चोटों की सूची में इस हंसी का

ब्यौरा अक्सर छूट जाता है

हाँ ,उनकी सभी चीजों की सूची में इस मुस्कराहट का विवरण क्यों न दर्ज किया गया पुलिस से | कवि ने अपनी "औरतें " नामक कविता में चर्चित नारी संघर्ष पर ध्यान देंगे -

एक औरत जो तेज़ाब से जल गयी है खुश है कि बच गयी है

उसकी दाई आँख

एक औरत हार कर कहती है - तुम जो जी आये ,कर ले मेरे साथ

बस मुझे किसी तरह जी लेने दो

एक औरत नाक से बहता खून पोंछती हुई बोलती है

कसम कहती हूँ ,मेरे अतीत में कहीं नहीं था प्यार

अस्पताल में हजार प्रतिशत जली हुई औरत का कोयल दर्ज

कराता है अपना मृत्यु-पूर्व बयान कि उसे नहीं जलाया किसी ने

उसके अलावा बाकी हर कोई है निर्दोष गलती से उसके ही हाथों फूट गयी किस्मत और फूट गया स्टोव कवि ने अपनी "औरतें " नामक कविता में चर्चित नारी संघर्ष पर ध्यान देंगे -

एक औरत जो तेज़ाब से जल गयी है खुश है कि बच गयी है

उसकी दाई आँख

एक औरत हार कर कहती है - तुम जो जी आये ,कर ले मेरे साथ

बस मुझे किसी तरह जी लेने दो

एक औरत नाक से बहता खून पोंछती हुई बोलती है

कसम कहती हूँ ,मेरे अतीत में कहीं नहीं था प्यार

अस्पताल में हजार प्रतिशत जली हुई औरत का कोयला दर्ज

कराता है अपना मृत्यु-पूर्व बयान कि उसे नहीं जलाया किसी ने

उसके अलावा बाकी हर कोई है निर्दोष गलती से उसके ही हाथों फूट गयी किस्मत और फूट गया स्टोव इस दुनिया हर औरत की पीड़ा का चित्रण किया है कवि ने इस कविता में | आखिरी पंक्तियाँ सब के मन बेबस बनाती हैं |

हजारों -लाखों छुपती हैं गर्भ के अँधेरे में

इस दुनिया में जन्म लेने से इंकार करती हुई

वहां भी खोज लेती हैं उन्हें भेड़िया ध्वनि तरंगों

वहां भी ,भ्रूण में उतरती है हत्यारी कटार |

उदयप्रकाश की इन कविताओं में नारी पर होने अत्याचारों से पीड़ित कवि के मन के आवेग, आवेश ,विडम्बना और विलाप आदि भावनाएं उभर कर आई हैं | किसी खोयी हुई चीज की तलाश है उनकी कविताएं | इस दुनिया की हर औरत की पीड़ा का चित्रण किया है कवि ने इस कविता में |

निष्कर्ष:-

स्त्रियों की समस्याओं को कई लेखकों ने गहरा अध्ययन किया | कुछ लेखकों ने आंदोलित भावना के साथ नज़र डाली है | कई रचनाकारों ने अपनी समस्या ही समझकर देखा | कुछ एक रचनाकार उन समस्याओं का समाधान ढूँढ निकालने की कोशिश भी कर रहे हैं | हमारे कवि उदय प्रकाश अपनी इन कविताओं के माध्यम नारी जाति पर होनेवाली अत्याचारों का वर्णन बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है | उनकी लेखनी का प्रभाव पाठकों के मन पर अवश्य पड़ ही जाता है |

सन्दर्भ सूची :-

मूल ग्रंथ

1. उदय प्रकाश

पचास कवितायें - नयी सदी के लिए चयन वाणी प्रकाशन ४६९५, २१- ए दरियागंज , नयी दिल्ली ११० ००२ ISBN - ९७८-९३-५०००-७२४-२

प्रथम संस्करण २०१२ आवृत्ति २०१९

2. कथा साहित्य में नारी विमर्श

डॉ.शोभा निम्बालकर -पवार

मानसी पुब्लिकेशन्स , दिल्ली ISBN - 9788189559168

3. हम संभ्य औरतें

मनीषा जगदीश भारद्वाज सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली ISBN - ८१-७९३८-०२३-9